31-12-67 ओम शान्ति रात्रि क्लास

बच्चे समझते है स्वर्ग में तो जरूर जावेगे यह भी समझते है कि राजाई घराने में आवेगे। यानी अन्दरयां इसी। प्रजा को बाहरियां कहा जाता है। यहां अगर रहेगे तो राजाई दिवाल के अन्दर रहेगे। ऐसे बहुत है जो यहां नहीं रहते है। बाहर में रहते है तो राजाई दिवाल के अन्दर ही रहते है। बाहर में रहने वाले यहां के रहने वालो से उंच पद पाते है। समझाया जाता है कि तुम बाहर रहते हुए तो भी अन्दर में रहते हो। ट्रस्टी बन कर चलते रहे है। सब कुछ ही ईश्वर का है। जो मेरे पास है ममतव नही है। जो ऐसे समझ कर चलते है तो वो भी अन्दर में रहने वाले ही कहे जाते है। समझते है कि हम अपनी कमाई के ट्रस्टी है। हम अन्दरियां है या नहीं। बाबा से पूछे तो बाबा बताये सकते है कि उंच राजा कैसे बने। इसकी भी युक्ति है ना। जैसे बच्चो को बाप की मल्कियत का पता रहता है फिर किसको जास्ती नशा और किसको कम नशा रहता है। हर एक ही अपने दिल से पूछ सकते है। इसको कहा जाता है विशाल बुधि तुम्हारी बुधि तो कितनी ही उंच चली गई है। और कोई को तो शिव बाबा की पहचान ही नही है। तुम्हारे भी नम्बरवार है। महारथी घोड़े स्वार प्यादे। यह सब ही बाते अन्तर मुख हो कर विचार सागर मथन करने से आपे ही बुधि में आ जाता है। अवस्था को तो जरूर ही देखते है। स्कूल में भी रजिस्टर मे देखते है। टीचर भी चलन तथा पढ़ाई आद के बारे में बताते है। बच्चे इमतिहान भी होते है। इसमें कच्चा इमतिहान नही होता है। तुम अपना इमतिहान आपे ही ले सकते हो कि हम कहां तक लायक है। बाप भी तो बता सकते है। दिल भी तो समझ सकती है ना। इनका ऐम आबजेक्ट भी है। पढ़ाई तो बहुत उंच है। सब का कल्याण हो जाता है। तुम्हारा धर्म बहुत ही सुखदाई है। और धर्म अति ही ढेर है। स्वर्ग में क्या है और किसका राजय होता है यह तो कुछ भी नही जानते है। तुम भी नम्बर वार पुरुषार्थ के अनुसार ही समझते हो ना। पुरुषार्थी जो भी है बहुत पुरुषार्थ करते है। तुम समझते हो कि बाबा हाई पोज़ीशन वाला है। यह दादा थोड़ा ही अनुभव सुनावेगे। बच्चे समझते है बाकी सब की जांच करनी पड़ती है। दिल भी अपनी गवाही देती है। स्टूडेन्टस भी समझते है कि हम किन मार्कस में कम हो जावेगे। स्टूडेन्टस को तो सब कुछ ही मालूम रहता है। तुम्हारी भी स्टूडेन्ट लाईफ है ना। अपने को मियां मिठ्ठु थोड़ा ही समझना चाहिये। वो भी तो एक भूल है। गवर्नमेंट में तो फस्टक्लास सर्विस में आना चाहिये ना। गवर्नमेंट की सर्विस में लिमिटिड कमाई होती है। पुरुषार्थ तो करना ही नही पड़ता है। व्यापारी तो अनलिमिटिड होते है। नीचे उपर तो बहुत ही होता है ना। कमाई बहुत भी हो जाती है। आफिसरस लोग तो खाते बहुत है। तो इनकम टैक्स या कस्टम पर जो भी होते है बहुत खाते है। सबका बांधा हुआ होता है। 2000 की आमदनी मास में 5000 और भी तो मिलता होगा ना। बहुत ही चिन्ता रहती है। इस चिन्ता में ज्ञान तो कोई इतना ही मुश्किल से ही उठा सकते है। सतयुग में तुमको ऐसे जागीर मिलती है जो तो बिल्कुल ही चिन्ता नही रहती। इस अवस्था का ही फिर ख्याल है। तुम बच्चो को तो फिक्कर है। इस बाबा को तो फिक्कर नही रहता है। जड़भा अनुसार बनना है जरूर। फिर भी पुरुषार्थ तो जरूर करते है ना। स्टूडेन्टस तो समझते है कि फलाणी तो हमसे बहुत ही अच्छी है। सुप्रीम टीचर भी तो समझते है। तुम ब्र0 कु0 है। यह ब्रहमा भी तुमको इन दवारा ही मिलता है। तो इनको भी दलाली तो बहुत मिलती है ना। अनेक प्रकार से आमदनी बुधि को पाती है ना। इनको भाग्यशाली भी कहते है। कल्प 2ही यह होता है। बदल नही सकते है। ऐसे नही क्योंकि भगवान सिर्फ भारत में ही आते है। और कोई भी जगह नही। तो तुम बच्चो को समझाना है। खास लेडिज़ का ही तुम खो तो भी तुम्हारे पास बहुत आवें। पर्दा नशीन लेडिज़ हिन्दूओं में भी है और मुसलमानो में भी है। वल्भाचार्य की स्त्रीयां बाहर नही निकलती। बाप कहते है यह ज्ञान सब के लिये है। बाप का परिचय देना है। प्रदर्शनी वा म्युज़ियम में एक दिन फिमेल का एक दिन मेल का रखना चाहिये। तो पर्दे वाले वा बिगर पर्दे वाले दोनो आजावेगे। नारीयो की महिमा भी है। श्री मत दवारा अपने पति का भी उधार करते है। नारीयां पुरुषो का उधार करते है। अब बाबा डायरेक्ट तो देते है कोई अमल में लावें। अच्छा मीठे मीठे रूहानी बच्चोंक को रूहानी बाप दादाकी

गुड नाईट।